ओ३म्

'वेद प्रचार ही सच्चा धर्म प्रचार है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आजकल यदि धर्म संज्ञक देशी विदेशी मत–मतान्तरों या संस्थाओं की संख्या गिनने लगें तो यह अत्यन्त कठिन व जटिल श्रम साध्य कार्य होगा। सम्भवतः सभी धार्मिक संस्थाओं की गणना की भी न जा सके। यदि गणना कुछ कुछ कर ली जाये तो इन सबकी मान्यतायें क्या–क्या हैं, उनमें दूसरों से क्या अन्तर है, यह जानना भी कठिन कार्य है। एक मौलिक प्रश्न है कि क्या यह सभी संस्थायें या मत–मतान्तर धर्म हैं? यदि यह सभी धर्म मान लिये जायें तो फिर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि धर्म एक होता है व अनेक? आईये, धर्म वस्तुतः है क्या, इस पर विचार करते हैं। कहा जाता है कि अग्नि का धर्म जलाना है। इसी प्रकार से कहा जाता है कि वायु का धर्म स्पर्श, जल का शीतलता, पृथिवी का गन्ध आदि है। आकाश का गुण शब्द कहा जाता है जो कि वैज्ञानिक आधार पर भी सिद्ध है। किसी वस्तु के गुण ही वस्तुतः धर्म कहलाते हैं। यदि अग्नि का धर्म जलाना है तो क्या स्थान स्थान पर जो अग्नियां हैं, उनके धर्मों व गुणों में कहीं न्यूनाधिक अन्तर है? ऐसा नहीं है, अग्नि चाहे हमारे घर में हो, या पड़ोसियों के यहां या सुदूर स्थान पर, सब जगह उसके गुण वा धर्म एक समान होते हैं। किसी भी पदार्थ के गुणों को ही उसका धर्म कहा जाता है। यदि ऐसा है तो मनुष्यों का धर्म क्या हो सकता है। मनुष्य कोई जड़ पदार्थ न होकर एक चेतन प्राणी है जो सोच सकता है, विचार, चिन्तन, मनन, ऊहापोह, विश्लेषण आदि कर सकता है। ऐसे मनुष्य या प्राणी का धर्म क्या हो सकता है। इसका निर्धारण या तो ईश्वर कर सकता है या फिर कोई बहुत बुद्धिमान मनुष्य कर सकता है। हम यह भी जानते हैं कि महाभारत काल तक भारत व संसार के अनेक देशों में वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार व प्रसार रहा है। देश में ऋषियों, विद्वानों, ज्ञानियों, चिन्तकों व विचारकों की बड़ी संख्या रही है। ऐसे लोगों को ही धर्म चर्चा करने व धर्म निर्णय करने का ज्ञान व सलीका आता है। **इन लोगों के विचारों को पढ़ने पर यह ज्ञात होता है कि सत्य का आचरण ही मनुष्य धर्म है।** यह सत्याचार न केवल भारत के किसी एक या व्यक्ति समूहों का धर्म है अपितु सारी दुनियां के मनुष्यों का धर्म है। संसार में एक भी ऐसा बुद्धिमान मनुष्य नहीं मिलेगा जो धर्म की इस परिभाषा से सहमत न हो। इसमें अन्य अनेक बाते भी जोड़ी जा सकती हैं जो सत्याचार की विरोधी न होकर पूरक हों। जैसे कि इस संसार को बनाने वाले सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना करना। यज्ञ व हवन

मन मोहन आर्य

दुःखद समाचार

वैदिक विद्वान पं. राजवीर शास्त्री नहीं रहे।

वेदों व वैदिक साहित्य के शीर्षस्थ विद्वान पं. राजवीर शास्त्री का आज प्रातः मोदीनगर, उत्तर प्रदेश में उनके निवास स्थान पर देहावसान हो गया। वह विगत कुछ वर्षों से रूग्ण चल रहे थे।

श्री राजवीर शास्त्री आजीवन आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली से जुड़े रहे और इसकी मासिक पत्रिका दयानन्द सन्देश के अवैतनिक सम्पादक थे। आपने अनेक वैदिक ग्रन्थों की रचना की जिनमें से कुछ वैदिक कोष, अनुसंधानपूर्ण कृति शुद्ध मनुस्मृति, वैदिक मनोविज्ञान, जीवात्म ज्योति, महर्षि दयानन्द के समस्त लेखन पर आधारित विषय सूची आदि हैं। आपने गुरूकुल पौंधा, देहरादून में ब्रह्मचारियों को आर्ष व्याकरण का अध्ययन भी कराया। आपने अनेक बार सहस्रों रूपयों की धनराशि गुरूकुल पौंधा आदि संस्थाओं को दान की। मोदीनगर में आज ही उनका दाह संस्कार किया जा रहा है। हम दिवंगत आत्मा को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देते हैं और उनके परिवार जनों के प्रति अपनी सहानुभूति एवं सम्वेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति व मोक्ष प्रदान करें।

–मनमोहन कुमार आर्य

करना जिसमें शुद्ध घृत व ओषिधियों से वैदिक ऋषियों द्वारा बनाई गई प्रक्रिया या विधि से अग्निहोत्र करने से वायु मण्डल की शुद्धता व पवित्रता में वृद्धि होती है, स्वास्थ्य के लिए हानिकर किटाणुओं का नाश होता है, ज्ञात व अज्ञात शारीरिक रोगों की निवृत्ति व मानसिक विकार दूर होकर चरित्र निर्माण होता है और यहां तक की सभी शुभकामनायें भी पूर्ण होती हैं। इसी प्रकार से माता–पिता की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना, ज्ञानियों, अतिथितियों व साधु सन्यासियों का सत्कार करना तथा पशु–पक्षियों आदि की रक्षा व उनको भोजन द्वारा तृप्त करना भी सत्याचार के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है। माता–पिता का कर्तव्य है कि वह अपनी सन्ताओं को परा व अपरा विद्या की शिक्षा व संस्कार देकर उन्हें योग्य बनायें। यह तो धर्म की बात हुई। अब वेद क्या हैं वह वेदों का आचरण धर्म कैसे हैं इस पर विचार करते हैं।

वेद के बारे में प्राचीन ग्रन्थों में यह उल्लेख पाया जाता है कि वेद आदिकालीन अर्थात् सृष्टि के आरम्भ से विद्यमान हैं। फिर इनका रचयिता कौन है? इसका उत्तर है कि आदि कालीन होने से इनका रचयिता कोई मनुष्य या विद्वान न होकर इस संसार को रचने वाला सृष्टिकर्ता ही इसका तथा आध्यात्मिक ज्ञान व विज्ञान का भी रचयिता है। इसको सिद्ध भी किया जा सकता है। हमने विचार करने पर पाया है कि प्राचीन काल में मनुष्य को उसी सत्ता ने जन्म दिया जिसने की इस सृष्टि को बनाया है। विज्ञान व हमारे देशी व विदेशी वैज्ञानिक इस तथ्य को स्वीकार करें या न करें परन्तु यह शत–प्रतिशत सत्य है कि इस सृष्टि की रचना ईश्वर से हुई है। यदि ईश्वर न हो और वह सृष्टि की रचना न करे, तो सृष्टि अस्तित्व में नहीं आ सकती। स्वतः सृष्टि का निर्माण वैज्ञानिक नियमों से ही असत्य सिद्ध होता है। अतः सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता तथा मानव जीवन के निर्वाह के लिए उत्कृष्ट ज्ञान का देने वाला एकमात्र ईश्वर ही सिद्ध होता है। यहां ज्ञान, ज्ञान देने वाला व ज्ञान लेने वाला तीन पृथक सत्तायें हैं। सृष्टि में समस्त ज्ञान का आदि मूल ईश्वर है। इसका तात्पर्य है कि ज्ञान रहित जड़ प्रकृति का उपयोग कर इससे सृष्टि यथा सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व ग्रह–उपग्रह तथा इस ब्रह्माण्ड की रचना करने वाला ईश्वर है। ईश्वर ज्ञानवान, सर्वज्ञ, अनादि, अनन्त, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, दयालु व न्यायकारी सत्ता है। सृष्टि की रचना करने के ज्ञान, बल, सर्वातिसूक्ष्म व सर्वव्यापक सत्ता की आवश्यकता है जो कि ईश्वर है। इसको जानने व समझने का एक ही उपाय है कि वेदों का अध्ययन और योग विधि से ईश्वरोपासना करना। हमारे वैज्ञानिक क्योंकि यह दोनों ही कार्य न तो जानते हैं और न ही करतें हैं, अतः वह ईश्वर को जानने व समझने में सर्वथा असमर्थ रहे हैं। जब वह अपने वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन में ध्यान का सहारा लेते हैं तो ईश्वर को जानने में भी यदि ध्यान विधि से चिन्तन करें, तो सफलता अवश्य मिल सकती है। रामायण व महाभारत ग्रन्थों से सिद्ध है कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम तथा योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि कर्म किया करते थे। उनके बाद उत्पन्न आदि शंकराचार्य भी ईश्वर के अस्तित्व में पूरी तरह विश्वास रखते थे। उनके ग्रन्थ वेदान्त दर्शन, गीता व उपनिषदों के भाष्य से उनकी ईश्वर विषयक मान्यताओं को जाना जा सकता है। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी आदर्श ईश्वर उपासक थे। उन्होंने ईश्वर के स्वरूप का वर्णन वेद एवं वैदिक साहित्य के आधार पर किया है जो सत्य व व्यवहारिक है, काल्पनिक कदापि नहीं। ऐसा अनुभव अध्येता व ईश्वर उपासना करने वालों का है। हमारा अनुमान है कि यदि बड़े–बड़े वैज्ञानिक योग, ध्यान विधि से वैदिक सिद्धान्तों को जानकर उपासना करने का प्रयास करें तो उन्हें ईश्वर की सत्ता का ज्ञान हो जायेगा। वैज्ञानिकों का ईश्वर को न मानना कुछ इस प्रकार का है कि कोई विद्वान किसी पुत्र का अस्तित्व स्वीकार करता है परन्तु समीप में पिता के उपस्थित न होने पर उसके अस्तित्व से इनकार करता है। इसी प्रकार वैज्ञानिक सृष्टि को तो स्वीकार करते हैं परन्तु इस सृष्टि के रचयिता को अस्वीकार कर देते हैं। उनका यह कथन अज्ञान व अवैज्ञानिक ही कहा जा सकता है। सृष्टि है तो सृष्टिकर्ता अवश्य है उसी प्रकार से जिस प्रकार से पुत्र है तो उसके माता–पिता अवश्य ही हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न सहस्रों मनुष्यों में चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। उन्होंने यह ज्ञान अन्य पुरूष ब्रह्मा जी को कराया। वेदों के ज्ञानी होने से यह पांचों महान आत्मायें ऋषि की उपाधि से अलंकृत हैं। वेदों में परा व अपरा, आध्यात्मिक और सृष्टि विद्यायें हैं। इनकी सहायता से मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति होती है। ईश्वर, ईश्वर का स्वरूप, ईश्वर के कार्य तथा इसी प्रकार जीवात्मा,

इसका स्वरूप व इसके कार्यों पर वेदों में विस्तार से चर्चा है। इनके साथ ही सृष्टि व प्रकृति का भी ज्ञान वेदों में विद्यमान है। मनुष्य के सभी कर्तव्यों का ज्ञान भी वेदों में दिया गया है। कृषि, युद्ध, राजधर्म, गोपालन, अंहिसा, ईश्वरोपासना, यज्ञ, स्त्री का गौरव, विवाह, शिक्षा, संस्कारों का ज्ञान व इनके संकेत भी वेदों में दिये गये जिस पर ध्यान केन्द्रित कर मनुष्य इन विद्याओं का विस्तार कर सकता है जैसा कि आज के वैज्ञानिकों ने किया है। अतः वेदों का अध्ययन व उसकी शिक्षाओं के अनुसार आचरण ही सभी मनुष्यों का धर्म है। यदि इनका प्रचार किया जाये तो उसे वेद प्रचार कहेंगे। इसी प्रकार से वैदिक शिक्षाओं का प्रचार ही धर्म का प्रचार कहलाता है। आजकल जो धर्म नाम से कार्यरत संस्थायें व मत आदि हैं, उन्होंने कुछ वेदों का और कुछ व अनेक कहानी किस्से आदि बना कर नये नाम से मत, धर्म, सम्प्रदाय आदि बना लिये हैं। वैदिक शिक्षा, ज्ञान, व कर्तव्यों की शिक्षा अपने आपमें पूर्ण हैं। इससे जीवन का उद्देश्य – धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष अर्थात् भोग व अपवर्ग की प्राप्ति होने से यही सारी दुनियां के लोगों के लिए कर्तव्य व आचरण करने योग्य है। इसके विपरीत यदि वह मत–मतान्तरों के अनुयायी बनते हैं तो वहां आधी–अधूरी व कुछ धर्म विरूद्ध बातें व कार्य ऐसे हैं, जिससे मनुष्य के जीवन के बन्धनों के कटने के स्थान पर बन्धनों का परिमाण बढ़ता है। यह बातें वेदाध्ययन करने के बाद प्राप्त शुद्ध बुद्धि से ही जानी जा सकती हैं।

लेख की समाप्ति पर हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि वेद प्रचार और धर्म प्रचार एक दूसरे के पूरक एवं पर्याय हैं। मनुस्मृति में भी मनु महाराज ने कहा है कि 'वेदाखिलो धर्ममूलम' अर्थात् धर्म का मूल वेद है। मूल को छोड़कर यदि पत्तों को पानी दिया जायेगा तो वृक्ष या पौधा सूख जायेगा। आईये, मत–मतान्तरों की सोच से ऊपर उठकर ईश्वर के सच्चे स्वरूप तथा वेदों की समग्र शिक्षाओं को जान कर उसका पालन करें और अपने जीवन को सफल करें। वेदों का ज्ञान व उसकी शिक्षायें ही धर्म हैं, अन्य जो भी है यदि वह वेदों के अनुकूल हैं तो वह धर्म, अन्यथा धर्म नहीं हैं। हमें विचार करना चाहिये और सत्य को स्वीकार करना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि समय आगे निकल जाये और हम मत–मतान्तरों के चक्कर में फंस कर अपना जीवन बर्बाद कर लें। वेद एक ऐसा महावृक्ष है जिसके नीचे अक्षय छाया है और जिसमें बैठने से ही जीवन का कल्याण होता है व हो सकता है।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121